तुम्हारी आस्थाओं ने

तुम्हारी धार्मिक आस्थाओं ने
मनुष्यता को पंगु बना दिया
रास्ते कांटों से भर दिये
नदी-नाले जमीन-आसमान
फूल-पौधे-पत्ते, पंछी
आज़ाद प्रकृति के स्रोत
तुम्हारी आस्थाओं ने
उन्हें जर्जर बदसूरती में बदल दिया
आस्तिक आस्थाओं ने
मानव को मानवेत्तर कर दिया
पशु सुलाया बगल में
पंछी चुगाया आंगन में
वंचितों को हाँका शहर से
स्त्रियों को जलाया दहेज में
तुम्हारी तरक्की ने
मशीनें बनायीं मनुष्य के लिए
मनुष्य एवं उसी दल का
पुरज़ा हो गया।

Scanned with CamScanner

हम निकल पड़ते हैं
उजड़ी बस्तियों को आबाद करने
बिल्कुल कब्रों पर फूल उगाने जैसा
सच यही है।

घर–घर में सूनी आंखों से
एक–एक औरत
घर से बाहर गए
अपने–अपने आदमी के
लौटने का इंतजार करती है,
सच यही है
वह कतरा–कतरा होकर
जीती है
और कतरा कतरा होकर
मरती है।

झाड़ू और कलम

कल मेरे हाथ में झाड़ू था
आज कलम

Scanned with CamScanner

कल झाड़ू से मैं तुम्हारी गन्दगी हटाता था
आज कलम से
मैं तुम्हारे भीतर की गन्दगी धोऊंगा
तुम वाचाल हो
मुझे मालूम है
तुम चतुर हो
मुझे अहसास है।
तुम धूर्त और व्यभिचारी हो
मैं भुक्तभोगी हूं।
तुमने गन्दगी फैलाने के लिए
वेद/पुराण/मनुस्मृति का सहारा लिया
कल उन्हें जलाने का
मुझे अधिकार न था
आज शब्दों की आंच से
मैं उन्हें जलाऊंगा
मुझे यह भी मालूम है
अकेले मनुस्मृति जलाने से
समाज की जड़ता पर कुछ होने वाला नहीं है।
तुम्हारे भीतर की बेशर्म संस्कृति
के बीच पली/बढ़ी
ब्राह्मणी कम्प्यूटराइज्ड मेमोरी को
ध्वस्त करना होगा
तब तुम कदापि नहीं कह सकोगे
कि वेद कीं रचना ईश्वर ने की है
हाँ किसी भड़वे ने जरूर की होगी
हो सकता है वह भड़वा ही ईश्वर बन गया हो,
या ईश्वर भड़वा।
तुम्हारी महान् संस्कृति के इतिहास में तो
व्यभिचार की अनगिनत घटनाएँ हैं
देवदासियों की दर्दनाक चीखें हैं
और तुम्हारे कामुक अट्टहास
अब तुम यह भी नहीं कह सकोगे

Scanned with CamScanner

कि तुम ब्रह्म के मुख से
और हम उस साले ब्रह्म की टांगों से पैदा हुए
जिसने अपने बेटी के साथ बलात्कार किया था
मुझे मालूम नहीं
तुम श्रेष्ठ ब्राह्मण हम पतित शूद्र
इस भ्रम से जल्द मुक्ति मिलेगी ?
कल वेद ग्रंथों का सहारा ले
तुमने मेरे हाथ में झाड़ू पकड़ाई थी
आज परिवर्तन के लिये
तुम्हें अपने हाथ में झाड़ू लेना ही होगा
वह दिन जल्द आएगा
चेतना का सूरज
उग चुका है।

रात में डूबा लोकतंत्र और वे

वे आ गये
हाथों में बर्छी
रिवॉल्वर
नंगी तलवारें
कट्टे लिये
राजनीति के अलंबरदारों से भरी जीप गाड़ी
होंडा/मारुति/फिएट/एंबेस्डर
आते ही सीढ़ियां लें
चुनावी नारों से पटी दीवारों से
पोस्टर उतारना आरंभ कर देते
उछलते/गीत गाते/ढोल बजाते
उनमें नायक से खलनायक सभी होते
वे चंबल, भिंड, मुरैना के बीहड़ों की
पैदाइश न होते,
प्रतिक्रियाओं के बीच जन्मे, पले
महानगरीय संस्कृति के मुखौटे होते।

Scanned with CamScanner

तुम्हारे पास केवल शब्द हैं
उन्हीं को तुमने आंदोलन बनाना है
क्रान्ति हथियारों से नहीं
शब्दों से ही आती है।

ईश्वर की मौत

ईश्वर की मौत
उस दिन होती है
जब बनता है कोई मन्दिर या मठ।

जहाँ बैठता है कोई
ठग,
लुटेरा,
गुमराह करने वाला।

ईश्वर की मौत
उस दिन होती है
जब किसी महिला को बनना पड़ता है
देवदासी
जाना पड़ता है वेश्यालय।

ईश्वर की मौत
उस पल होती है
जब मेरे भीतर उभरता है सवाल—
ईश्वर का जन्म
किस माँ की कोख से हुआ था?
ईश्वर का बाप कौन?

Scanned with CamScanner

वजूद है

आज जब अखबारें देती है खबरें
हमारी अस्मिता लुट जाने की
बर्बरता और घिनौनी चश्मदीद
घटनाओं की
खून खौल क्यूँ नहीं उठता हमारा
सफेदपोशी में ढकते-ढाँपते
हम मुर्दा हो चले हैं।
खाक होना है एक दिन सबको
फिर आज ही लड़कर
खाक क्यों नहीं होते?
जानते हो न?
एक जमाने में अखबारों में
हमारी परछाईयाँ भी वर्जित थीं
अभिव्यक्ति पर पाबन्दी थी
अशिक्षा-अंधकार नियति थी
तब भी मुर्दों से अछूतों में
स्वाभिमान की चिंगारी
फूटती थी

चिथड़ों से लिपटे कंकालों ने
तुम्हारे-हमारे लिए दो गज जमीन
स्वाभिमान और आज़ादी
की जंग जीती थी
चिथड़ों में लिपटे इंसान आज भी हैं
उनकी भूख और बूढ़ी आँखें देख
मुँह फेर कर चल सकते हो।
परन्तु ये हमारा अतीत है
हमारी सफेदपोशी
उनके संघर्षों का वजूद है।

Scanned with CamScanner